Vol. X
Number-1

ISSN 2319-7129
(Special Issue) February, 2018

UGC Notification No. 62981

EDU WORLD

A Multidisciplinary International
Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

Scanned by CamScanner

ISSN : 2319-7129

EDU WORLD

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

Vol. X, Number - 1 February, 2018

(*Special Issue*)

Chief Editor

Dr. S. Sabu

Principal, St. Gregorios Teachers' Training College, Meenangadi P.O., Wayanad District, Kerala-673591. E-mail: drssbkm@gmail.com

Co-Editor

S. B. Nangia

A.P.H. Publishing Corporation

4435–36/7, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi-110002

Scanned by CamScanner

CONTENTS

A Study on the Influence of Emotional Intelligence on Transactional Styles Among School Teachers — 1
Shanmugavadivu K.P. and Janani Selvaraj

A Comparative Study of Social Stress Among the Students of U.P. Board and C.B.S.E. Schools — 10
Mr. Naveen Kumar

Issues and Challenges of Rubber Plantation Workers and the Educational Problems of their Wards — 18
Dr. Jangkholun Mate

Adolescents: Problems and Solutions — 22
Shikha Khare

An Overview on Digital Payment in India — 30
Dr. Binod Prasad

Communication Behaviour of Sugarcane Farmers in Cuddalore District — 34
T. Kalidasan, Ramesh P. and D. Vengatesan

Influence of Suryanamaskar on Mental Health — 40
Dr. Alok Kumar Pandey

Studies on the Development of PGPR Consortium with Improved Shelf Life — 43
Mahalakshmi S. and M. Vijayapriya

Delineation of Aquifer in Hard Rock Terrain Using Vertical Electrical Sounding, Buldhana District, Maharashtra, Part of Central India — 48
Manish S. Deshmukh, S.V. Kulkarni and S.P. Khadse

A Study of Benefits and Challenges of Using Innovative Technologies for Accepting Online Payments: With Special Reference to MQR Code by MSWIPE Technologies Pvt.Ltd — 54
Dr. Meena Sharma

Sampling and Sampling Methods — 62
Dr. Rajendra D. Badhe

Role of KSWDC in Changing the Face of Women Through "Reach Programme" with Special Reference to Trivandrum City — 66
Jisha Sasikumar

Scanned by CamScanner

A Study on Factors Affecting Performance of Management to Employees in Private Sectors, India 416
Dr. R. Sritharan

Stressed Out Police: The Use of Coping Strategies 421
Dr. R. Rajinikanth

Approaches to Evolution of Corporate Social Responsibility 427
Dr. K. Chezhiyan

Guru Shri Kubernath Tanjorkar: The Maestro who Popularised Bharatanatyam 430
Jalpa Patel

Contributions of Guru Smt. Anjali Merh in the Development of Bharatanatyam Dance 433
Jalpa Patel

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक प्रयास : एक अध्ययन 435
डॉ. विजय कुमार

1990 के बाद समकालीन हिंदी उपन्यासों का परिदृश्य 441
पूजा प्रसाद

Physicochemical Analysis of Water Bodies in Yavatmal 447
Jitendra Ghanshyam Suryawanshi

Separation of Plant Pigments from Medicinal Plants of Solaneceae Family by Using Paper Chromatography 451
Sandip T. Pedam

Internet: History and Its Applications in Libraries 456
Shatrughan Kishanrao Dhavan

नागरी भागातील कुपोषित बालकांच्या कुटुंबप्रमुखांचे शिक्षण आणि मुख्य व्यवसाय 460
प्रा. डॉ. उमेश देविदास वाणी

महादेवी वर्मा की कविताओं में विद्रोह के स्वर 464
डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे

महिला लेखन के संदर्भ में मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी के विविध रूप 470
डॉ. रमेश एस. जगताप

Guidelines for Contributors 477

Scanned by CamScanner

महादेवी वर्मा की कविताओं में विद्रोह के स्वर

डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे*

सारांश

मीरा ने अपने युग में धर्मसत्ता, राजसत्ता, अर्थसत्ता की चुनौतियों के बीच स्वयं (स्त्री) को नई अस्मिता के साथ स्थापित किया था इसके लिए उसे विद्रोह और संघर्ष का मार्ग चुनना पड़ा। आधुनिक मीरा कही जाने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा की इमेज विरह–वेदना से पीड़ित 'नीर भरी दुख की बदली' के रूप में बना दी गई है, जबकि वह साहित्यिक जगत में पूरे विद्रोह और विद्रोही तेवर के साथ उपस्थित हैं। महादेवी की वेदना के साथ–साथ वैश्विक संवेदना भी है। स्थापित मान्यताओं और परम्पराओं से बगावत करती हुई स्त्री, स्त्रीतव और स्त्री अस्मिता को पुर्नस्थापित करती हैं। उनकी प्रतिनिधि कविताओं में उनके विद्रोह के स्वर फूटते सुनाई देते हैं।

बीज शब्द – निहार, रश्मि, दीपशिखा, थामा, अग्निरेखा, विरह–वेदना, फिर विकल हैं, मृत्यु जीवन का चरम विकास, पीड़ा कितनी रात, मंदिर के पट, छायावाद, रहस्यवाद, आधुनिक मीरा

प्रस्तावना

विश्व में नारीवादी आंदोलन जिस रूप में आया वह भारत में उस रूप में नहीं आया, क्योंकि भारत की पृष्ठभूमि और समस्याएँ कुछ भिन्न रहीं हैं। यहाँ प्राचीन काल से ही समय–समय पर स्त्रियाँ अपनी अस्मिता का उद्घोष करती रहीं हैं और सभ्यता व संस्कृति के विकास व संवहन में वह अपना योगदान भी देती रहीं हैं। व्यवस्था के भीतर रहते हुए व्यवस्था परिवर्तन भारतीय नारी का प्रमुख लक्षण है, वह पुरूष के विरोध में नहीं है बल्कि अपने वजूद को पूरी गरिमा के साथ स्थापित करना चाहती है और इसके लिए वह प्रतिकार, प्रतिरोध, आक्रोश व विद्रोह का आश्रय लेती है।

महादेवी वर्मा : व्यक्तित्व व काव्य में विद्रोह के स्वर

महादेवी वर्मा का जन्म फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश) में 26 मार्च 1907 ई. को हुआ था और उनका निधन 11 सितम्बर 1987 ई. को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा एवं माता का नाम श्रीमती हेमरानी देवी था। बचपन से ही वे कविता लिखने लगी थी। बचपन में ही उनका बाल विवाह हो गया था। इनके पति का नाम डॉ. रूपनारायण वर्मा था। पर जीवन भर वे अकेली रहीं।

महादेवी वर्मा छायावाद के चार स्तंभों में से एक हैं। विनय मोहन शर्मा के अनुसार –"छायावाद ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी जी ने छायावाद को जीवन।" हिन्दी साहित्य में उनका परिचय उन्हीं के शब्दों में "मैं नीर भरी दुःख की बदली" के रूप में माना जाता है। वे रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्री थी। उनका काव्य पीड़ा और वेदना का काव्य है। वे आजीवन साहित्य सेवा में लगी रहीं। प्रारंभ में वह बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित

*सहायक प्राध्यापक हिन्दी शास. महाविद्यालय सनावल जिला-बलरामपुर (छ.ग.)

Scanned by CamScanner

रहीं और भिक्षुणी बनने की लालसा में थीं। वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से भी सक्रियता से जुड़ी रहीं। गाँधी, नेहरू से प्रभावित थीं पर आपातकाल के समय उन्होंने विरोध में स्वर मुखरित किया, वे सिद्धांतवादी विदुषी थीं। वे आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्री मानी गई हैं। उनकी विरह वेदना, रहस्यवाद भाषा की ऊँचाई, भाव की गहराई सबने मिलकर महादेवी को 'आधुनिक मीरा' के नाम से पहचान स्थापित किया है। उन्हें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, पद्मभूषण और पद्म विभूषण जैसे पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। उन्होंने प। तथा ग। दोनों में लिखा है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, यामा, दीपशिखा, अग्निरेखा आदि उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

महादेवी वर्मा के संबंध में एक कवि गढ़ ली गई है कि वे विरह वेदना की कवयित्री हैं और रहस्यवाद, छायावाद ही उनके प्रमुख अंग हैं। परन्तु उनके स्त्री विमर्श का पक्ष भी बहुत मजबूत है जिसकी चर्चा प्रायः नहीं की जाती है। उन्होंने इलाहाबाद में 1955 में साहित्यकार संसद की स्थापना की। साथ ही महिला कवि सम्मेलनों की नींव उन्होंने ही रखी। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और महिला अधिकारों के लिए भी काम किया। महादेवी ने प्रयाग महिला वि।पीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया एवं 'चाँद' पत्रिका (महिला पत्रिका) का दायित्व भी संभाला।

व्यवस्था के पीड़ित लोग व्यवस्था के प्रति आक्रोशित न हों और विद्रोह न करें, वह भी चिंतनशील विदुषी चेतना? ये कैसे हो सकता था। इसलिए महादेवी के व्यक्तित्व और कृतित्व में एक विद्रोह दिखाई देता है। शायद उनके जीवन का प्रथम विद्रोह उनके बारह–चौदह वर्ष की उम्र में ब्रजभाषा में लिखी इन पंक्तियों में दिखाई देता है –

"मंदिर के पट खोलत का
ये देवता तो दृग खोलिहैं नाहीं।
अक्षत फूल चढ़ाऊँ भले
हर्षाय कबौ अनुकूलिहैं नाहीं।
बेर हजारन शंखहि फूंक
पै जागिहैं ना अरू डोलिहैं नाहीं
प्रानन में नित बोलत हैं
पुनि मन्दिर में ये बोलिहैं नाहीं।" (1)

सगुणमार्गी परम्परा के परिवार में पली बढ़ी महादेवी सिद्ध, नाथ, सहज योगियों व निर्गुण संतों की भाषा में बोल रही थीं। सगुण उपासना का जो उपहास सरहपा, गोरख, कबीर आदि कर गये थे, उन्हीं की परंपरा को आगे बढ़ाती हुई ये पंक्तियाँ हैं।

कबीर कहते हैं –
"पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूँ पहार
यातैं तो चाकी भली, पीस खाय संसार।"
निर्गुण मार्गी क्रांतिकारी संत गुरू घासीदास कहते हैं –
"मंदिरवा म का करे जइबो
अपन घट ही के देवा ल मनइबो" – (पंथी गीत)

महादेवी की इन पंक्तियों को महज तुकबंदी नहीं कहा जा सकता वह वर्तमान धार्मिक मान्यताओं व परंपराओं से विद्रोह था। यही चिंतनधारा आगे चलकर उनके मन में भिक्षुणी बनने की लालसा को तीव्र करती

Scanned by CamScanner

है। पर जब बौद्ध भिक्षु उन्हें बिना देखे, लकड़ी की ओट में उनसे वार्तालाप करते हैं, तब वह फिर विद्रोह करती है और उन्हें गुरू बनाने का विचार बदल देती है।

महादेवी छायावाद की कवयित्री हैं जहाँ, प्रकृति है, सौन्दर्य है, प्रेम है और ऐसे प्रेमल व्यक्तित्व सौन्दर्य पर जब पति न रीझे, तब दाम्पत्य और पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह कर महादेवी ससुराल नहीं जाती और अपना जीवन अकेले बिताती हैं। भारतीय संस्कृति और मनुवादी व्यवस्था में स्त्री को पिता, पति या पुत्र किसी न किसी के अधीन रहने का निर्देश है। महादेवी इसका उल्लंघन करती हैं और अकेली रहती हैं, वह पुरूष सत्ता के संरक्षण व प्रभुत्व को अस्वीकार करती हैं क्या यह उनके व्यक्तित्व का कम विद्रोही पक्ष है?

भारत की आजादी की लड़ाई के पक्ष में उनकी पंक्तियाँ अंग्रेजी दासताँ के विरूद्ध विद्रोह ही तो है –

"वन्दनी जननी! तुझे
मुक्त कर देंगे
श्रृंखलाएँ ताप के डर से गलेंगी
भित्तियाँ यह लौ की रज में मिलेंगी
रक्त से अपने खिलाकर लाल बादल
तिमिर अब हम ऊषा का आरक्त कर देंगे।" (2)

महादेवी के विद्रोह में आत्मोत्सर्ग की प्रबल उत्कंठा देखने को मिलती है, वह कहती हैं –

"मस्तक देकर आज खरीदेंगे हम ज्वाला
जो ज्वाला नभ में बिजली है,
जिससे रवि शशि ज्योति जली है,
तारों में बन जाती है जो
शीतलता दायक उजियाला।" (3)

यह क्रांति की बात है, बगावत की बात है। विद्रोह और क्या है? किसी भी स्थापित मान्यता, परंपरा, प्राधिकरण के आदेश को मानने से इंकार करना ही विद्रोह या बगावत है। जो व्यक्ति ऐसी गतिविधियों में शामिल होता है, वह बागी या विद्रोही है। कोई भी विद्रोह किसी न किसी उत्पीड़न की स्थिति और उससे अस्वीकृति की भावना से उत्पन्न होता है। यूँ तो विकीपिडिया के अनुसार विद्रोह, दंगा, क्रांति, सैनिक विद्रोह के रूपों में बताया गया है। पर शांतिपूर्ण, साहित्यिक एवं विधिक तरीके से भी विद्रोह किए जा सकते हैं।

महादेवी की वेदना निजी भी है और वैश्विक भी। पति के होते हुए भी वह परित्यक्ता की तरह जीवन बसर करती हैं तो क्या उन्हें स्त्री की पीड़ा का अनुभव न हुआ होगा? ज बवह कहती हैं –

"बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ
दूर तुमसे हूँ, अखण्उ सुहागिनी भी हूँ"

इसके कई आयाम हैं। एक साथ संयोग–वियोग का सुख–दुःख का अद्भुत चित्रण है। वेदना और आनंद का यह मिश्रण स्वानुभूति और सहानुभूति को दर्शाता है। शायद इसीलिए – दिनेश कुमार राय लिखते हैं – "उनकी वेदनानुभूति, विश्ववेदना से मिलकर सौन्दर्य चेतना को विस्तृत आयाम प्रदान करती है।" (4) अर्थात

Scanned by CamScanner

उनकी वेदना सिर्फ उनकी नहीं है, बल्कि वैश्विक रूप धारण कर लेती है। और इस वैश्विक वेदना से ही संभवतः वैश्विक विद्रोह मुखरित होता है।

छायावादी कविता जीवन और सौन्दर्य की कविता है, पर इस धारा में रहकर महादेवी मृत्यु की श्रेष्ठता सिद्ध करती हैं –

"बिखर कर कन कन में लघु प्राण
गुनगुनाते रहते यह तान,
अमरता है जीवन का ह्रास
मृत्यु जीवन चरम विकास" (5)

यह जीवन की स्थापित मान्यताओं के प्रति विद्रोह है, अमरता, जीवन–मोह आदि से बगावत। मृत्यु के साथ खड़े होना जीवन (तथाकथित परंपरागत जीवन) से बगावत है।

कवयित्री न केवल मानव जीवन बल्कि प्रकृति की घुटन को भी महसूसती और लिखती है –

"मिल जाता काले अंजन में
सन्ध्या की तारों का राग,
जब तारे फैला फैलाकर
सूने में गिनता है आकाश,
उसकी खोयी सी चाहों में
घुटकर मूक हुई आहों में" (6)

विद्रोह के लिए साहस और आत्मविश्वास अति आवश्यक होते हैं और महादेवी की कविता किसी अव्यवस्था की रात्रि से नहीं डरती, बल्कि कान्फिडेंस के साथ सवाल खड़े करती है –

"प्रणत लौ की आरती ले,
धूम–लेखा स्वर्ण–अक्षत नील–कुमकुम वारती ले,
मूक प्राणों में व्यथा की स्नेह उज्ज्वल भारती ले,
मिल अरे बढ़ आ रहे यदि प्रलय झंझावात!
कौन भय की बात?
पूछता क्यों शेष कितनी रात?" (7)

कवयित्री पीड़ा से भरी हुई है और उनकी यही पीड़ी उनके लेखन का मौलिक स्वर है –

"पीड़ा मेरे मानस से
भीगे पट सी लिपटी है
डूबी सी यह निःश्वासें
ओठों में आ सिमटी हैं!" (8)

वे इस पीड़ा को विश्व राग बना देना चाहती हैं ताकि वैश्विक विद्रोह प्रस्फुटित हो –

"विश्व होगा पीड़ा का राग
निराशा जब होगी वरदान,

Scanned by CamScanner

साथ लेकर मुरझायी साध
बिखर जाएँगे प्यासे प्राण।" (9)

यह विद्रोह एक नवीन दृष्टि लाती है। कहाँ छायावाद में स्त्री और प्रकृति की सुन्दरता है तो उस सुन्दरता के विरूद्ध (सौन्दर्य की क्षणिकता, नश्वरता में) कवयित्री का स्वर मुखरित है –

"गठित सुन्दर अंगों के साथ
कभी श्रीमय थी मेरी देह,
जरा के कारण ही वह आज
हो गयी जर्जर दुख का गेह।
सत्यवादी के मृषा न बोल।" (10)

जीवन, जगत, कवि, कलाकार सभी यौवन और जीवन पर रीझते हैं, ठीक इसके विपरीत कवयित्री असौन्दर्य की दिशा में ले जाती है। यह हमारे तथाकथित 'माइन्ड सेट' के प्रति विद्रोह है। जीवन में सुडौल अंग ही नहीं, झुर्रियाँ भी हैं, यौवन ही नहीं बुढ़ापा भी है। यह काव्य व जीवन के स्थापित मापदण्डों से बगावत है।

सीमाओं के बंधन से आक्रोशित महादेवी सीमा के उस ओर भी देख लेना चाहती हैं अर्थात बंधन के प्रति भी बगावत है –

"फिर विकल हैं प्राण मेरे!
तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देख लूँ उस ओर क्या है!
जा रहे जिस पन्थ से युग कल्प उसका छोर क्या है?
क्यों मुझे प्राचीर बनकर
आज मेरे श्वास घेरे?"

साँसों की दीवारे भी जिन्हें पसंद नहीं, उन्हें जगत की दीवारें कैसे रास आ सकती हैं? महादेवी की कविता झकझोरती है और जगाती भी है। जैसे कबीर कहते हैं – "मन रे जागत रहियो भाई" वैसे ही महादेवी जागने और दूर तक जाने की बात कहती हैं –

"जिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना
जाग तुझको दूर जाना!"

महादेवी वैश्विक अराजकता, मूल्यहीनता, अनैतिकता की चिंताजनक स्थिति से परिचित हैं, वह मनुष्य को वर्तमान परिस्थितियों से विद्रोह करते हुए झकझोरते हुए कहती हैं –

"सृजन के विधाता! क्हो आज कैसे
कुशल उँगलियों की प्रथा छोड़ दोगे
अजर शिल्प भी अधबना तोड़ दोगे?" (11)

महादेवी मंदिर, मूर्ति, पूजा, प्रार्थना को नकारते हुए जीवन को ही सुंदर मंदिर निरूपति करती हैं, मानो कबीर कह रहे हैं – "सब साँसन की साँस में" –

"क्या पूजन क्या अर्चन रे!
अस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे!

Scanned by CamScanner

मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनन्दन रे!"

कबीर की तरह महादेवी का यह कर्मकाण्डों एवं पाखंड के प्रति विद्रोह ही है।

महादेवी के समय में भी धर्मशास्त्रों का वर्चस्व था, जिसके अनुसार स्त्रियों का पढ़ना तक वर्जित था, खासकर संस्कृत में औरत और शूद्र को नाटक के संवाद बोलने तक की इजाजत नहीं थी, साहित्य लेखन स्त्री के लिए अनुकूल न था। ऐसे समय में महादेवी पढ़ी, संस्कृत में एम.ए. किया, प्रधानाचार्य बनी और पुरूषों के वर्चस्व में फँसी साहित्यिकता की धारा के बीच घुसकर स्वयं को मजबूती से स्थापित किया यह समाज से एक बड़ा विद्रोह था।

महादेवी का साहित्यिक धरातल पर प्रवेश एक बड़ी घटना है। भले ही उन्होंने उन दिनों प्रचलित छायावाद में कविताएँ लिखी लेकिन उनका ग।–लेखन जन से जुड़ा है – औरत से जुड़ा है। महादेवी की कविता अस्मिता के लिए ही कलपती है। अस्मिता न होने का अहसास ही अस्मिता के संघर्ष की नींव होता है – वही उसे प्रतिरोध करने के लिए बल भी देता है। उनकी अस्मिता के लिए तड़प उनके ग। में आई और जन–जन से जुड़ी वह तड़प उनके काव्य में भी मुखरित हुई है। [12]

निष्कर्ष

मीरा ने लोक–लाज, कुल–रीति को छोड़कर और तोड़कर भक्ति आंदोलन में पुरूष संतों के बीच खुद को स्थापित किया वहीं महादेवी ने पुरूष वर्चस्व के साहित्यिक धरातल में खुद को स्थापित किया। मीरा के हाथों में एकतारा थी और पाँवों में घुँघरू थे, महादेवी के हाथों में कागज, कलम और माइक थी और पाँव के नीचे था स्टेज। हजारों वर्षों से पुरूषवादी सत्ता का वर्चस्व स्त्री अस्मिता को रौंदता रहा है और समय–समय पर स्त्री अपनी अस्मिता को ठीक उसी तरह पुनर्स्थापित करती रही है जैसे पत्थर की चट्टानों के बीच कोई बीज अपना अंकुर लेकर वृक्ष की संभावनाओं को जन्म देता है। महादेवी की कविताएँ केवल रोने–धोने और आँसू बहाने की इमेज में कैद नहीं की जा सकती हैं, ये अस्मिता, प्रतिरोध, आक्रोश और विद्रोह की कविताएँ भी हैं। नारी मुक्ति का स्वर और समानता का पक्ष यहाँ भी मौजूद है। महादेवी को स्त्री–मुक्ति एवं व्यवस्था–विद्रोह के संदर्भ में भी नए ढंग से पढ़ा जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1 पाण्डेय, डॉ. रामजी. *महादेवी : प्रतिनिधि कविताएँ*, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 17

2 वही, पृष्ठ 19

3 वही, पृष्ठ 19

4 कमलेश, डॉ. कामता. *हिन्दी अनुशीलन*, भारतीय हिन्दी परिषद इलाहाबाद, मार्च–जून 2002, पृष्ठ 119

5 वही, पृष्ठ 115

6 वही, पृष्ठ 117

7 वही, पृष्ठ 117

8 पाण्डेय, डॉ. रामजी. *महादेवी : प्रतिनिधि कविताएँ*, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 35

9 वही, पृष्ठ 37

10 वही, पृष्ठ 196

11 वही, पृष्ठ 20

12 गुप्ता, रमणिका. *स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने*, शिल्पायन दिल्ली, 2010, पृष्ठ 71

Scanned by CamScanner